# सबके लिए स्वास्थ्य : दूर के ख्वाब

डॉ. वाई.पी. गुप्ता

भले ही स्वास्थ्य का अधिकार संविधान के 21वें अनुच्छेद के अनुसार हमारा मौलिक अधिकार है लेकिन जानलेवा बीमारियों से पीड़ितों की तेज़ी से बढ़ती संख्या और नित नई पनप रही बीमारियों को देखते हुए सबके लिए स्वास्थ्य का लक्ष्य दूर का ख्वाब नज़र आता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अनुमानित किया है कि वर्ष 1999 में 560 लाख मौतें हुईं। (जिनके मुख्य कारक तपेदिक, डायरिया, एड्स और मलेरिया रहे।) इनमें से 105 लाख मौतें पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की थीं। बच्चों की इन मौतों में से 98 प्रतिशत विकासशील देशों में हुई थीं। विकसित देशों में दो तिहाई मौतें 70 वर्ष की उम्र के बाद होती हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जीवन की प्रत्याशा बढ़कर 66 वर्ष हो गई है। भारत में यह 53.2 वर्ष है और पहले स्थान पर खड़े जापान में 74.3 वर्ष है। वि.स्वा.सं. के पूर्वानुमान के अनुसार 21वीं सदी में सभी के लिए औसत उम्र 73 वर्ष हो जाएगी।

सूचित किया गया है कि पिछले पचास वर्षों में विश्व में 40 करोड़ लोग भूख और खराब सफाई व्यवस्था के कारण मरे हैं। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार गरीब देशों के 80 करोड़ लोग हर दिन भूखे सो जाते हैं। इनमें से एक तिहाई भारत में रहते हैं। यहां कुपोषण से ग्रसित बच्चों की संख्या 3.7 करोड़ आंकी गई है। हमारे देश में स्कूल जाने से पहले ही 49.2 प्रतिशत बच्चे कुपोषण का शिकार होते हैं। रोम में आयोजित विश्व स्वास्थ्य सम्मेलन,में कहा गया था कि सभी देशों से कुपोषण समाप्त होना चाहिए और वर्ष 2015 तक अल्प पोषितों की संख्या घटाकर आधी कर देना चाहिए। जबकि वस्तुस्थिति यह है कि अपर्याप्त भोजन और खराब स्वास्थ्य परिस्थितियों के कारण 50 प्रतिशत बच्चे अविकसित हैं।

शिशुओं की मृत्युदर (प्रति 1000 पैदा हुए बच्चों में एक वर्ष से कम उम्र में मारे बच्चे) सामान्यतः देश के स्वास्थ्य और आर्थिक दशा को परिलक्षित करती है। स्वीडन में यह दर सबसे कम 6.7 है और भारत में 79 है। देश में पांच वर्ष से कम उम्र में मृत्युदर प्रति 1000 जीवित जन्मों पर 111 है। केरल में यह दर सबसे कम 17 है और उड़ीसा में सर्वाधिक 114 है। भारत में इस ऊंची दर का कारण जनन काल में महिलाओं का कुपोषित होना व दूषित वातावरण में रहना है।

विश्व में 3 करोड़ लोग दृष्टिहीन हैं और लगभग 4 करोड़ बच्चे विटामिन ए की कमी से पीड़ित हैं। कुपोषण और अज्ञानता के कारण विकासशील देशों में हर वर्ष पांच लाख बच्चे अपनी नेत्र ज्योति खो देते हैं। भारत में दृष्टिहीनों की संख्या 1.2 करोड़ है जो विश्व में सर्वाधिक है। बिहार में अंधेपन की घटनाएं सर्वाधिक होती हैं। ट्रेकोमा, कंजक्टिवाइटिस और कुपोषण बच्चों में जबकि मोतियाबिन्द, मधुमेह और ग्लूकोमा मध्यम उम्र के लोगों में अंधेपन के मुख्य कारण हैं। दुर्घटनाएं और चोटें भी अंधेपन का कारण बनती हैं।

## अल्पपोषित बच्चों का प्रतिशत

| | लड़के | लड़कियां |
|---|---|---|
| ग्रामीण | 27.0% | 52.0% |
| शहरी | 36.6% | 48.3% |
| शहरी मध्यम वर्ग | 09.8% | 15.0% |
| शहरी उच्च वर्ग | 03.2% | 04.8% |

*स्रोत : भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की एक कार्यशाला की रिपोर्ट, 1991*

सन 1989 में किए गए एक अध्ययन के मुताबिक लड़कों व लड़कियों के बीच पोषण का अन्तर बरकरार था। यह बात उपरोक्त तालिका से ज़ाहिर है।